**E-ISSN:** 2583-9667
**Indexed Journal**
**Peer Reviewed Journal**
https://multiresearchjournal.theviews.in

**Received: 21-08-2024**
**Accepted: 27-09-2024**
**Published: 29-10-2024**

**INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY**

**Volume 2; Issue 4; 2024; Page No. 225-229**

# आधुनिक भारतीय शिक्षा में शैक्षिक दर्शन के योगदान का अध्ययन करना

**[1]Ravindra Singh and [2]Dr. Kuldeep Singh Tomar**

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.17598223

**Corresponding Author:** Ravindra Singh

**सारांश**

डॉ. एस. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को मद्रास के पास तिरुत्तनी में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे सर्वपल्ली वीरस्वामी और सीताम्मा के दूसरे पुत्र थे। उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के सर्वपल्ली गाँव से थे। राधाकृष्णन के पिता वीरस्वामी एक स्थानीय ज़मींदार की सेवा में एक अधीनस्थ राजस्व अधिकारी थे, जिसके कारण उन्हें परिवार चलाने के लिए वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। तिरुत्तनी के सामान्य धार्मिक माहौल और राधाकृष्णन के माता–पिता की हिंदू धर्म के प्रति भक्ति ने उनके मन पर इतनी गहरी और स्थायी छाप छोड़ी कि उनके जीवन का पूरा दृष्टिकोण उसी के अनुसार ढल गया। विभिन्न संस्थानों में अपनी पढ़ाई के संबंध में उन्होंने कहा, "मैंने अपने जीवन के पहले आठ साल (1888–1896) दक्षिण भारत के एक छोटे से शहर तिरुत्तानी में बिताए, जो आज भी धार्मिक तीर्थयात्रा का एक बड़ा केंद्र है। मेरे माता–पिता पारंपरिक अर्थों में धार्मिक थे। मैंने बारह वर्षों तक ईसाई मिशनरी संस्थानों में अध्ययन किया: लूथरन मिशन हाई स्कूल, तिरुपति (1896–1900), वूरहीस कॉलेज। वेल्लोर (1900– 1904) और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज (1904–1908)। इस प्रकार, मैं ऐसे माहौल में बड़ा हुआ, जहां अदृश्य एक जीवित वास्तविकता थी।" राधाकृष्णन ने प्राथमिक शिक्षा तिरुत्तानी में पूरी की थी। हालाँकि उनके पिता नहीं चाहते थे कि वे अंग्रेजी सीखें माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने प्री–बीए, दो वर्षीय कला पाठ्यक्रम के लिए वेल्लोर में वूरहीस कॉलेज में प्रवेश लिया, जिसके बाद वे कला के फेलो (एफए) बन गए। उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से बीए और एमए की डिग्री पूरी की।

**मूल शब्दः** माता–पिता, पारंपरिक, शिक्षा, धार्मिक, ज़मींदार

## 1. प्रस्तावना

पिछले 7 दशकों में शैक्षिक अनुसंधान की गुणात्मक वृद्धि काफी आश्चर्यजनक रही है। दुनिया दिन–प्रतिदिन सिकुड़ती जा रही है और देश और लोग एक–दूसरे के करीब आते जा रहे हैं। आज हमें विश्व नागरिकों की आवश्यकता है और ऐसे नागरिकों को तैयार करने के लिए हमें अपनी शैक्षिक प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है। पूर्व और पश्चिम को आपस में मिलना चाहिए, उनकी विचारधाराओं, विचारों, अवधारणाओं, संस्कृति, सभी को स्वीकार किया जाना चाहिए और एक सुदृढ़ शैक्षिक प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। इसके लिए हमें पुराने दर्शनों का अध्ययन करके उन विचारों को नए आधुनिक विचारों के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दर्शन की तुलना की जा सकती है क्योंकि वे विपरीत रूप से भिन्न हैं, प्रकृतिवाद और आदर्शवाद।

स्वतंत्रता के सात दशक से अधिक समय बाद, परिस्थितियाँ 1947 जैसी नहीं हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत ने विकास और प्रगति के मामले में बहुत सी उपलब्धियाँ हासिल की हैं। युवा शक्ति की अपार संभावनाओं के साथ, भारत अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी भूमिका बहुत प्रभावी ढंग से निभा रहा है। तकनीकी प्रगति ने सभी देशों को वैश्विक दुनिया नामक एक छोटे से क्षेत्र में ला खड़ा किया है। देशों के बीच निकटता उनके लोगों को अधिक समझ, अधिक व्यापार, अधिक सांस्कृतिक बंधन आदि के लिए अवसर प्रदान करती है। इस वृद्धि और विकास के साथ–साथ पूरी तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। इस निकटता का लाभ उठाकर कुछ छिपी हुई ताकतें अपना कारोबार चला रही हैं। ये छिपी हुई ताकतें अधिक प्रतिस्पर्धा, अधिक बाजारोन्मुख विचारधारा और कम मूल्य आधारित समाज का निर्माण कर रही हैं। ये छिपी हुई ताकतें अपने स्वयं के असंतुलित विकास में लगी हुई हैं और पूरी दुनिया में गड़बड़ी कर रही हैं। बाजार की ताकतें लगातार मानव जीवन से मानवीय पहलू को बाहर निकालने की कोशिश कर रही हैं। प्रतिस्पर्धा संघर्ष और अधिक वर्चस्व को जन्म देती है। एक विचारधारा का दूसरे पर वर्चस्व यानी अपनी सांस्कृतिक, वैचारिक, नस्लीय, बौद्धिक श्रेष्ठता की भावना दूसरों पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए खुद को उकसाती है। इस संबंध में, यह हावी होने वाली ताकत युद्ध के मैदान में युद्ध नहीं करती है। वे पर्दे के पीछे से खेलती हैं। ये ताकतें स्वदेशी मूल्य प्रणाली को

नकार कर, धन की लालसा पैदा करके लोगों की सोचने की शक्ति पर कब्जा करने की कोशिश करती हैं। इतिहास गवाह है कि जब भी कोई विचारधारा, संगठन, देश या धर्म अपना वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश करता है, तो वह सबसे पहले स्वदेशी शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर देता है। जॉन स्टुअर्ट मिल कहते हैं: "शिक्षा और राय, जिनका मानव चरित्र पर इतना व्यापक प्रभाव है, उन्हें इस शक्ति का उपयोग इस तरह करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में उसकी अपनी खुशी और समग्र भलाई के बीच एक अटूट संबंध स्थापित हो जाए।" जॉन स्टुअर्ट मिल ने स्वतंत्रता पर इस सिद्धांत को स्पष्ट किया, जहाँ उन्होंने तर्क दिया कि "एक सभ्य समुदाय के किसी भी सदस्य पर उसकी इच्छा के विरुद्ध अधिकारपूर्वक शक्ति का प्रयोग करने का एकमात्र उद्देश्य दूसरों को नुकसान पहुँचाना है।" लेकिन किसी तरह, हमने पिछले दो सौ वर्षों में ब्रिटिश शासन के कारण अपनी शिक्षा प्रणाली की आत्मा से स्वदेशी की भावना को खो दिया है और अब शिक्षा को बाजार की वस्तु बनाकर, हमने वह रास्ता प्रशस्त किया है जो निश्चित रूप से समझ और चिंतन क्षमता को समाप्त करने वाला है। अब शिक्षा दान का विषय नहीं रह गई है।

### 1.1 अध्ययन का महत्व

परिचय से यह स्पष्ट है कि आधुनिक शिक्षा पर एस. राधाकृष्णन के दार्शनिक दृष्टिकोण के योगदान पर भारत में बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। शर्मा (1989) ने राधाकृष्णन की शैक्षिक अवधारणाओं की तुलना रसेल से की है और देशपांडे (1994) ने शिक्षा पर राधाकृष्णन के विचारों की तुलना विभिन्न भारतीय और पश्चिमी विचारकों के विचारों से की है। शिक्षा के विभिन्न पहलुओं और आधुनिक भारत में इसके निहितार्थों पर इन दोनों लेखकों के विचारों के संबंध में कोई गहन अध्ययन नहीं किया गया है। इन दोनों दार्शनिकों के दर्शन का गहन अध्ययन किया गया है क्योंकि इसका शिक्षा के विभिन्न पहलुओं जैसे उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण के तरीके, शिक्षक की भूमिका और अनुशासन पर सीधा असर पड़ता है। इसलिए, शोधकर्ता ने एस. राधाकृष्णन के दार्शनिक दृष्टिकोण और आधुनिक भारतीय शिक्षा में इसके निहितार्थों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

दार्शनिक अध्ययनों के बारे में, शेषाद्रि (1997) ने 'शैक्षणिक अनुसंधान के पांचवें सर्वेक्षण' में कहा, "शिक्षा के दर्शन को शिक्षा के लिए प्रासंगिक महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाना चाहिए और अवधारणाओं को स्पष्ट करने वाले तर्क प्रस्तुत करते हुए, बौद्धिक समर्थन के साथ आध्यात्मिक विचारों को आगे बढ़ाते हुए और मानक धारणा के लिए आधार प्रदान करते हुए दार्शनिक रूप से उनका समाधान करना चाहिए।" अध्ययन के महत्व को ध्यान में रखते हुए, शोधकर्ता शिक्षा पर राधाकृष्णन के आदर्शों और अंतदृष्टि को सबसे सुसंगत और सुसंगत तरीके से प्रस्तुत करना चाहते थे।

## 2. साहित्य की समीक्षा

प्रकाश भाऊसाहेब सालवी (2013)20 ने अपने अध्ययन "शिक्षा पर महात्मा गांधी: दार्शनिक परिप्रेक्ष्य" में शिक्षा की स्वतंत्रता पर जोर दिया। एम. के. गांधी, एक प्यारे और बहुत अच्छे विचार वाले सार्वभौमिक व्यक्ति थे, जिनका जन्म आधुनिक युग में भारत में हुआ था। उन्होंने शिक्षा से संपूर्ण विकास के साथ पारंपरिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर जोर दिया, जो भारत के संदर्भ में दुनिया के आधुनिक युग से संबंधित है। गांधी राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, समाजवादी और शिक्षाविद् हैं। वे कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग के संचय के साथ जीते हैं। शिक्षा पर गांधी के विचार सभी के लिए जीवन का मूल तरीका है। गांधी एक छात्र के संपूर्ण विकास पर जोर देते हैं। मुख्य जिम्मेदारी शरीर, मन, आत्मा और बुद्धि का विकास करना है। वे भावनात्मक और मानसिक विकास को महत्व देते हैं। वे कहते हैं कि विद्यार्थी, जो समाज का एक जिम्मेदार अंग बनने जा रहा है, हम शिक्षा के माध्यम से उसके सामाजिक और नैतिक विकास पर जोर देना चाहते हैं। लेकिन वर्तमान शिक्षा में ऐसा कोई जीवन दर्शन नहीं है, जो विद्यार्थी को राष्ट्रीय व्यक्ति बनाए। गांधी की महत्वपूर्ण अवधारणा '3 एच' है। '3 एच' का अर्थ है सिर, हृदय और हाथ। गांधी विद्यार्थी के संपूर्ण विकास के बारे में इस अवधारणा की खोज करते हैं। गांधी सिर, हृदय और हाथ के समानांतर विकास के साथ समन्वय स्थापित करना चाहते हैं। इसका अर्थ है बौद्धिक, भावनात्मक विकास के साथ–साथ मानव की कार्य संस्कृति। गांधी विभिन्न विषयों के बीच समन्वय और सह–संबंध का एक रूप बनना चाहते थे, जिसे पाठ्यक्रम और शिक्षा संकायों में शामिल किया गया। गांधी समकालीन भारत की उदार और व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली को समानांतर महत्व देते हैं। गांधी का शिक्षा दर्शन प्रकृतिवाद, अस्तित्ववाद और अध्यात्मवाद का सहयोग है। मूल रूप से गांधी एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वे आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर भी जोर देते हैं। गांधी अहिंसा और सांप्रदायिक सद्भाव पर जोर देते हैं। वे जैन धर्म से प्रेरित थे। गांधी के संदर्भ में सत्य और अहिंसा जीवन के दिव्य मूल्य हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि इन मूल्यों को लागू करने के लिए हमें शिक्षा में बदलाव लाने की जरूरत है। गांधी की बुनियादी शिक्षा योजना विद्यार्थी के चरित्र निर्माण के लिए है, जिसमें किसी भी तरह के उत्पादक कार्य के माध्यम से उसके जीवन की सुरक्षा हो। जॉन डेवी कहते हैं, 'गांधी की शिक्षा योजना सभी अन्य प्रणालियों से एक कदम आगे है। यह एक बहुत ही क्रांतिकारी शैक्षिक प्रयास है। हम सभी को भारत से शिक्षा के बारे में बहुत कुछ सीखने की उम्मीद है।' हम यहाँ देख सकते हैं कि जॉन डेवी गांधी के शैक्षिक दर्शन से प्रेरित थे। आज की स्थिति में, हम इस योजना के महत्व को देख सकते हैं। अभी उदार शिक्षा पूरी तरह से विफल है। इस स्थिति में हमें गांधी की शिक्षा की इस योजना पर बार–बार सोचने की जरूरत है। आज भी, यह योजना भारत में बेरोजगारों के लिए बहुत उपयोगी है। यह पूरी दुनिया के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, खासकर विकासशील देशों के लिए। अब आने वाला समय है, जब हम गांधी के शिक्षा दर्शन के संबंध में इस योजना पर फिर से ठीक से और गंभीरता से विचार करेंगे।

शिबू, वी.एम. (2013)21 ने डॉ.एस. राधाकृष्णन की दार्शनिक धारणा को स्पष्ट तरीके से समझने की कोशिश की है। डॉ.एस. राधाकृष्णन एक आदर्शवादी सामाजिक दार्शनिक थे। उनका उद्देश्य प्राचीन भारतीय दार्शनिक विचारों को भारतीय सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में लाना था। वे हमारे जीवन में दर्शन का अभ्यास करने में विश्वास करते थे। वे भारतीय दर्शन को पश्चिमी दर्शन के समान ही मूल्यवान मानते थे। लेकिन अंग्रेजी बोलने वाले विश्व को स्थानीय भाषा में ज्ञान की कमी के कारण भारतीय प्रणालियों की पर्याप्त समझ नहीं है। शुरू से ही तेज और प्रतिभाशाली, विद्वान स्वभाव और शांत और संत जैसा व्यवहार रखने वाले राधाकृष्णन ने अपने जीवन के पहले आठ साल अपने माता–पिता के साथ अपने गृह नगर में खुशी और फलदायी ढंग से बिताए। उस प्रसिद्ध और प्रिय स्थान का शांतिपूर्ण और उत्साहपूर्ण वातावरण, साथ ही उनके माता–पिता का सौम्य प्रभाव, जो दक्षिण में आम तौर पर पारंपरिक अर्थों में अत्यधिक धार्मिक थे, ने उनके चरित्र को आकार देने और उनमें धार्मिकता और नैतिकता का जीवंत बीज बोने में बहुत मदद की। वंदना त्रिपाठी (2011)22 ने बताया कि टैगोर के शैक्षिक दर्शन का मूल प्रकृति, संगीत और जीवन से सीखना था। रवींद्रनाथ में दूरदर्शी और उनके अंदर महान शिक्षाविद् ने आज की समस्या को एक

सदी पहले ही हल कर दिया था। आधुनिक शिक्षा की समस्याएँ उपस्थिति, अन्य अनुचित साधनों का उपयोग और अनुशासनहीनता हैं। यह अधिक प्रमाण–पत्र उन्मुख है, बुद्धिमत्ता और प्रकृति के साथ सहसंबंध की अप्रासंगिकता है। टैगोर ने इन समस्याओं को शानदार तरीके से हल किया। कक्षा में स्वतंत्रता ने उपस्थिति की समस्या को हल किया, निरीक्षक की अनुपस्थिति ने नकल या अनुचित साधनों के उपयोग को हल किया। इस प्रकार टैगोर की शिक्षा प्रणाली एक महान उपलब्धि है। यह खेदजनक है कि हमने टैगोर द्वारा सुझाए गए सूत्रों को लागू करने का प्रयास नहीं किया। इसीलिए टैगोर के शांतिनिकेतन, विश्व भारती और श्रीनिकेतन को टैगोर की शैक्षिक त्रिमूर्ति कहा जा सकता है जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी शिक्षा विषय को विकसित करने का प्रयास किया। कवि ने इसके आदर्श वाक्य के लिए एक प्राचीन संस्कृत श्लोक चुना, "यत्र विश्वं भवतिएक निदम", जिसका अर्थ है, "जहाँ पूरी दुनिया एक ही घोंसले में मिलती है।" संतोष कुमार बेहरा (2011) 23 एम.के. गांधी और आर.एन. टैगोर दोनों के शैक्षिक दर्शन पर प्रकाश डालना चाहते हैं। महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर, ये ऐसे नाम हैं, जिन्हें किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है, लेकिन रचनात्मक, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में इनके कई पहलू हैं। गांधी और टैगोर दोनों को दुनिया के महानतम शिक्षाविदों में गिना जाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के दर्शन पूरी मानवता के लिए बहुत महत्व रखते हैं। वे आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षा के महत्व से अच्छी तरह वाकिफ थे। उन्होंने अपने उत्कृष्ट व्यक्तित्व और बौद्धिकता से न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को प्रबुद्ध किया।

## 3. अध्ययन के उद्देश्य

1. आधुनिक भारतीय शिक्षा में शैक्षिक दर्शन के योगदान का अध्ययन करना।
2. एस. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की समानता और अंतर की जांच करना।

## 4. शोध पद्धति

अनुसंधान के कई लक्ष्य जैसे पूर्वानुमान, स्पष्टीकरण आदि, एक लक्ष्य वर्णन है। वर्णनात्मक शोध विधियाँ वैसी ही होती हैं जैसी वे सुनाई देती हैं, यानी वे स्थितियों का वर्णन करती हैं। वे सटीक पूर्वानुमान नहीं लगाते हैं, और वे कारण और प्रभाव का निर्धारण नहीं करते हैं। वर्णनात्मक विधियों के तीन मुख्य प्रकार हैं: अवलोकन विधियाँ, केस–स्टडी विधियाँ, और सर्वेक्षण विधियाँ। इस अध्ययन में चौथे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। सर्वेक्षण विधि अनुसंधान में, प्रतिभागी साक्षात्कार या प्रश्नावली के माध्यम से प्रशासित प्रश्नों का उत्तर देते हैं। प्रतिभागियों द्वारा प्रश्नों के उत्तर देने के बाद, शोधकर्ता दिए गए उत्तरों का वर्णन करते हैं। सर्वेक्षण के विश्वसनीय और वैध होने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्न ठीक से बनाए गए हों। प्रश्न इस तरह लिखे जाने चाहिए कि वे स्पष्ट और समझने में आसान हों। इसलिए, शोधकर्ता ने एक ओपन–एंडेड प्रश्नावली बनाई। जैक्सन के अनुसार, "खुले–अंत वाले प्रश्न प्रतिभागियों से अधिक विविधतापूर्ण प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करने की अनुमति देते हैं, लेकिन सांख्यिकीय रूप से उनका विश्लेषण करना कठिन होता है, क्योंकि डेटा को किसी तरह से कोडित या कम किया जाना चाहिए। बंद–अंत वाले प्रश्नों का सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण करना आसान होता है, लेकिन वे प्रतिभागियों द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को गंभीरता से सीमित कर देते हैं। कई शोधकर्ता लिकर्ट–प्रकार के पैमाने का उपयोग करना पसंद करते हैं, क्योंकि सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण करना बहुत आसान होता है।" (जैक्सन, 2009, पृष्ठ 89)

### 4.1 जनसंख्या और नमूना

पहले तीन उद्देश्यों के लिए, नमूने या जनसंख्या की कोई आवश्यकता नहीं थी। चौथे उद्देश्य के लिए, स्कूल के सभी हितधारकों को चुपचाप शामिल किया गया था, लेकिन उनमें से कुछ को विशेष रूप से शामिल किया गया था।

### 4.2 डेटा एकत्र करने के उपकरण और तकनीक–

पहले तीन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए गुणात्मक सामग्री विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया था, जो दोनों दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों पर आधारित थे। उपलब्ध साहित्य का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसमें शैक्षिक विचारों को शामिल किया गया है, चाहे वह प्राथमिक स्रोतों (जैसे किताबें, पत्र, उनके द्वारा लिखी गई डायरी, उनके भाषणों और बातचीत की ऑडियो–विजुअल रिकॉर्डिंग) के रूप में हो या द्वितीयक स्रोतों (जैसे पत्रिकाएँ, विद्यालयों की पत्रिकाएँ, अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखी गई पुस्तकें, केएफआई समाचार पत्र, वृत्तचित्र, आदि) के रूप में हो। उपलब्ध साहित्य का गहन विश्लेषण किया गया है, जिसमें एस राधाकृष्णन के दार्शनिक, शैक्षिक और प्रासंगिक साहित्यिक विचार शामिल हैं, जो कि ज्यादातर अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, चाहे वह प्राथमिक स्रोतों (जैसे किताबें, पत्र, उनके द्वारा लिखे गए लेख, भाषण, आदि) के रूप में हो या द्वितीयक स्रोतों (जैसे दूसरों द्वारा लिखी गई किताबें, दूसरों द्वारा राधाकृष्णन को लिखे गए पत्र, वृत्तचित्र, आदि) के रूप में हो।

## 5. परिणाम एवं चर्चा

शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है। यह शिक्षा का वह स्तर है जो लोगों को सम्मान और मान्यता अर्जित करने में मदद करता है। मेरी राय में, यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों रूप से जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। हालाँकि, शिक्षा का असमान मानक अभी भी एक बड़ी समस्या है जिसे हल करने की आवश्यकता है।

शिक्षा का महत्व हर एक व्यक्ति के लिए निर्विवाद है। यह बिना कहे ही स्पष्ट है कि शिक्षा का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सभी लोगों को अध्ययन करने की आवश्यकता है। केवल शिक्षा के आगमन से ही लोग ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण बढ़ा सकते हैं। उदाहरण के लिए, टीवी देखकर या किताबें पढ़कर सीखने से लोगों को अपनी रुचि की किसी भी चीज़ के बारे में बहुत सारी जानकारी मिलती है जैसे कि गणित, वर्तमान समाचार, विनिमय दरें, अन्य देशों की संस्कृतियाँ इत्यादि। जाहिर है, अगर लोग बेहतर शिक्षित हों तो वे अधिक उपयोगी और सभ्य बन सकते हैं। जिन क्षेत्रों में निवासियों को उचित शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं, वहाँ जीवन उतना समृद्ध और समृद्ध नहीं हो सकता जितना कि उन स्थानों पर जहाँ शिक्षा के लिए उच्च मानक हैं।

दूसरी बात, शिक्षा हमारे समाज में इतनी बुनियादी भूमिका निभाती है कि हम इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह मानव समाज की सभ्यता के लिए एक निर्धारित तत्व है। यह न केवल हमें स्वस्थ परिवेश विकसित करने में मदद करती है बल्कि यह एक उन्नत समुदाय भी बनाती है। वास्तव में, आज हम जो कुछ भी बनाते हैं वह उस ज्ञान पर आधारित है जो हम अपने पूरे जीवन में शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह वैज्ञानिकों को उपकरण और उपकरणों का आविष्कार करने में सहायता करता है, जिसके परिणामस्वरूप आजकल उच्च तकनीक है। जितना अधिक विकसित जीवन होता है, उतनी ही सभी के लिए शिक्षा आवश्यक होती है।

हालांकि शिक्षा का जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में औसत शिक्षा एक जैसी नहीं होती है। परिणामस्वरूप, समस्याओं को हल करने के लिए रणनीतियाँ

बनाई जा रही हैं। शिक्षा के बिना, जीवन विनाशकारी और हानिकारक होगा। नतीजतन, आज तक, हम शिक्षा को वैश्विक और सभी के लिए विशेष रूप से गरीबों और विकलांगों के लिए सुलभ बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। अभी भी कुछ जगहें हैं जहाँ के निवासी लगभग पूरी तरह से अशिक्षित हैं, जिससे ज्ञान की गंभीर कमी है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक बच्चे को सीखने और अध्ययन करने के समान अवसर दिए जाने चाहिए। चूँकि किसी देश का विकास शिक्षा के स्तर पर बहुत हद तक निर्भर करता है, इसलिए उसे इसे सुधारने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हालाँकि विभिन्न देशों की शिक्षा प्रणाली समान नहीं है, लेकिन उनका एक साझा लक्ष्य है, जो अपने नागरिकों को उपयुक्त और उचित शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा पूरे समाज के लिए बिल्कुल फायदेमंद है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक आजीवन प्रक्रिया है जिसे जीवन भर मजबूत करने की आवश्यकता है। हालाँकि, हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो निरक्षरता को मिटा सके और आम आदमी को न केवल बुनियादी शिक्षा बल्कि उच्च और तकनीकी शिक्षा तक पहुँच प्रदान कर सके।

### 5.1 शिक्षा का दर्शन

शिक्षा शुरू से ही मानव समाज का हिस्सा रही है। सदियों से मानव समाजों में शिक्षा के प्रति निहित स्वार्थ रहा है। शिक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। वास्तव में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शिक्षा के बिना, अधिकांश समाज नष्ट हो जाएँगे। शिक्षा का दर्शन एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग शैक्षणिक क्षेत्र को संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है जिसमें लागू दर्शन शामिल है। इसका उपयोग उन दर्शनों का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता है जो शिक्षा के कुछ दृष्टिकोणों को बढ़ावा देते हैं, लक्ष्यों, अर्थ और अन्य पहलुओं की जाँच करते हैं।

जबकि अधिकांश समाज शिक्षा के महत्व से सहमत या स्वीकार करेंगे, उनमें से बहुत से लोग पर्याप्त संसाधनों को चैनल करने में विफल रहते हैं जिनका उपयोग शैक्षिक संस्थानों और गतिविधियों को बढ़ावा देने और समर्थन करने के लिए किया जा सकता है। यह सभी के लिए स्पष्ट है कि बच्चे, जो कम पढ़े–लिखे और निरक्षर पैदा होते हैं, वे अपने आस–पास के लोगों और पेशेवर शिक्षकों की मदद से उस समुदाय की संस्कृति और मानदंडों को जल्दी से सीख लेते हैं जिसमें वे पैदा होते हैं। कुछ ही समय में, बच्चे उचित तरीके से पढ़ने, लिखने और कार्य करने में सक्षम हो जाते हैं। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसके कौशल में सुधार होता है और समय के साथ, वह इतना सीख जाता है कि वह निरंतर मार्गदर्शन के बिना समाज में काम करने में सक्षम हो जाता है।

आज शिक्षा सामाजिक छंटाई के लिए एक तंत्र के रूप में काम कर सकती है। लोगों के पास अलग–अलग सीखने के कौशल होते हैं, जिनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक सुविधा प्रदर्शित करते हैं। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के आर्थिक भाग्य पर एक प्रमुख भूमिका निभाती है। शिक्षा व्यक्तियों को ज्ञान और कौशल से लैस करने में मदद करती है जो उन्हें अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को परिभाषित करने और उनका पीछा करने में सक्षम बनाती है। यह लोगों को समुदाय में भाग लेने की भी अनुमति देता है, जिससे वे अपनी स्थिति और बड़े पैमाने पर समाज की स्थिति को बेहतर बनाने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

जबकि कई लोग शिक्षा को बहुत ही व्यक्तिवादी तरीके से देख सकते हैं, लेकिन सामाजिक दृष्टिकोण से देखना महत्वपूर्ण है। समाज में जितने अधिक शिक्षित व्यक्ति होंगे, वह समाज उतना ही अधिक विकसित होगा। दुर्भाग्य से आज अधिकांश समाज उस संकीर्ण दृष्टिकोण को अपना रहे हैं जो लोगों को अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को बढ़ाने के तरीके के रूप में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके कारण कुछ व्यक्ति यह विचार रखते हैं कि वे स्वायत्त हैं। अंत में, यही व्यक्ति बहुत ही अधूरा जीवन जी रहे हैं। शिक्षा ऐसे व्यक्तियों को बनाने में सक्षम होनी चाहिए जो बड़े पैमाने पर समाज के लिए संपत्ति हों। राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली औपचारिक शिक्षा, समाज के अस्तित्व के लिए शिक्षा के दर्शन के महत्व की स्वीकृति है।

### 5.2 शिक्षा – ज्ञान आधारित समाज में एक मौलिक गतिविधि

शिक्षा ने व्यक्ति के पूरे अस्तित्व में उसके निर्माण और प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अभी भी निभा रही है। कई लेखकों ने अपने कार्यों में समय के साथ शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया है।

जीन जैक्स रूसो (1996) 1 ने तीन बुनियादी स्रोतों से शुरू करते हुए शिक्षा की परिभाषा दीः प्रकृति, मनुष्य और वस्तुएँ। हमारे अंगों और क्षमताओं का सहज विकास प्रकृति द्वारा प्रदान की गई शिक्षा है। इन क्षमताओं का दिन–प्रतिदिन उपयोग अन्य मनुष्यों द्वारा हमें प्रेषित शिक्षा है। हमारे आस–पास के औजारों और चीजों से प्राप्त व्यक्तिगत अनुभव, वस्तुओं द्वारा प्रदान की गई शिक्षा है।

लारूस डिक्शनरी (1995) शिक्षा को अर्जित ज्ञान को लागू करने के उद्देश्य से व्यक्ति को तैयार करने, प्रशिक्षित करने की क्रिया के रूप में परिभाषित करती है। रोमानियाई विश्वकोश शब्दकोश (1996) में, शिक्षा को बच्चों और युवा व्यक्तियों के जीवन के अनुभव को बदलने की एक मौलिक मौखिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है ताकि वे जीवन के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें, समाज में उनके एकीकरण के लिए व्यक्ति के साथ–साथ समाज के लिए भी लाभ हो।

कई लेखक इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि "भविष्य के समाज का रहस्य शिक्षा है। लेकिन शिक्षण की पुरानी अवधारणा में नहीं, बल्कि पूरे जीवनकाल में स्थायी शिक्षा में, ताकि सत्यापन, कल्पना, निर्माण और आविष्कार करने के लिए बेहतर क्षमताएं हासिल की जा सकें।" हालाँकि, आजकल का समाज पूरी शैक्षिक प्रक्रिया की कुछ विशिष्ट विशेषताओं को लागू करता है जो वर्तमान की वास्तविकता में लंगर डाले हुए हैं। वैश्विक स्तर पर, शिक्षा को एक घटना के रूप में माना जाता है, उन गतिविधियों में से एक जो अपने बहुत ही विशिष्ट कार्यों के माध्यम से संचार का पक्ष ले सकती है, साथ ही विभिन्न देशों, भौगोलिक क्षेत्रों और विभिन्न संस्कृतियों के बीच घनिष्ठ संचार संबंध स्थापित कर सकती है। हम व्यक्ति को बनाने और सूचित करने में शिक्षा की भूमिका को नजरअंदाज नहीं कर सकते, यह एक सामाजिक घटना है जो बदले में शिक्षा के किसी भी दार्शनिक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण आयाम बनती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को मूल्यों के संपर्क में लाने के बारे में है, बल्कि उसे इन मूल्यों के स्तर तक बढ़ाने के बारे में भी है, इस प्रक्रिया को व्यक्तिगत स्तर से समाज स्तर तक विस्तारित करने से, इस प्रकार इसके मूल्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। शिक्षा के विशेषज्ञों में से एक, जैक्स हलाक (1990)2 ने कहा कि "शिक्षा एक मानव अधिकार है, क्योंकि यह व्यक्तिगत रचनात्मकता की ओर ले जाती है, समाज में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधि में भागीदारी बढ़ाती है, इस तरह मानव विकास की प्रक्रिया में योगदान देती है"।

शिक्षा से स्वास्थ्य समस्याओं की घटनाओं में कमी आती है, मृत्यु दर में कमी आती है और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य शिक्षा, यदि सामान्य शिक्षा में शामिल की जाती है, सामान्य जीवों या संचार के अन्य साधनों से जुड़ी होती है, तो यह अधिक प्रभावी और कम खर्चीली हो सकती है। विकास की दुनिया में, तकनीकी ज्ञान की, शिक्षा एक आवश्यक भूमिका

निभाती है। यह एक शीर्ष रैंक वाली सामाजिक संस्था है जो मनुष्य और प्रकृति के बीच तालमेल को सुविधाजनक बनाते हुए लोकतंत्र और समानता को बढ़ाने में योगदान दे सकती है। ए. टोफ्लर (1995)3 के अनुसार "हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं, जिसमें दुनिया को एक साथ रखने वाली पूरी सत्ता संरचना बिखर रही है और एक नई सत्ता संरचना का जन्म हो रहा है, जो हर स्तर पर मानव समाज को प्रभावित कर रही है, और यह सत्ता संरचना ज्ञान है"। इस प्रकार, दुनिया के विकसित देश तथाकथित ज्ञान आधारित समाज के निर्देशांक पर तेज़ी से विकसित होंगे, और समाज की नई दिशा ज्ञान और सीखने की ओर होगी। इस संदर्भ में, शिक्षा भविष्य पर केंद्रित समाज के लिए आधार के रूप में खड़ी है, और ज्ञान आर्थिक और सामाजिक विकास का प्रमुख घटक बन जाता है।

## 6. निष्कर्ष

राधाकृष्णन आयोग और एनईपी 2020 दोनों का मुख्य उद्देश्य अपनी समस्याओं के लिए मजबूत समाधान तैयार करना और उन्हें लागू करना है जो भारत सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों और पहलों – मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्ट–अप इंडिया और नवीनतम आत्मनिर्भर भारत के साथ सामंजस्य रखते हैं। इसका उद्देश्य एक बेरोजगार युवा को आत्मनिर्भर कौशल–आधारित मॉडल के माध्यम से रोजगार खोजने के लिए पुनर्निर्देशित करना है। यदि हम स्कूली शिक्षा के खंड 3, 4 और 7 के साथ–साथ एनईपी दस्तावेज के 10.8 अनुच्छेद और राधाकृष्णन आयोग की सिफारिशों को देखें तो स्कूली और उच्च शिक्षा में कौशल शिक्षा को प्रमुखता दी गई है। सभी छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुँच को बहुत महत्व दिया गया है, चाहे उनका सामाजिक–आर्थिक वर्ग और पृष्ठभूमि कुछ भी हो। छात्रों के दिमाग के समग्र विकास, उनकी रुचियों को स्वीकार करने और उन्हें इसे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

## 7. सन्दर्भ


1. अभ्यंकर एसवी. जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का अध्ययन पीएच.डी. थीसिस,. सूरत (भारत) दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, शिक्षा विभागय 1982.
2. आचार्य एसआर. महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान भारतीय शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार में प्रख्यात शिक्षाविदों का योगदान पीएच.डी. थीसिस,. पुणे (भारत) पुणे विश्वविद्यालय, शिक्षा विभागय 1967.
3. अग्रवाल जेसी. शैक्षिक अनुसंधान, एक परिचय. नई दिल्ली (भारत) आर्य बुक डिपोय 1975.
4. अग्रवाल एस. डॉ. एस. राधाकृष्णन, एक स्मारक खंड (1888दृ1988). नई दिल्ली (भारत) प्रेंटिस–हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लि.य 1988.
5. अलवी एसएमजेड. शिक्षा का परिचय. जालंधर (भारत) स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.य 1969.
6. अस्थाना ए. वर्तमान भारतीय संदर्भ में डॉ. एस. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन का एक अध्ययन पीएच.डी. थीसिस,. भारत 2000.
7. बनर्जी ए. क्यूएस विश्व रैंकिंग में दुनिया के शीर्ष 200 में तीन भारतीय विश्वविद्यालय, आईआईएससी अनुसंधान के लिए प्रथम स्थान पर है. मिंटय 2021.
8. ब्लाउ ई. कृष्णमूति 100 वर्ष. न्यूयॉर्क (संयुक्त राज्य) ए जोस्ट एल्फर्स बुकय 1995.
9. ब्रूबैकर जेएस. शिक्षा के आधुनिक दर्शन. न्यूयॉर्क (संयुक्त राज्य) मैकग्रा–हिल पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लि.य 1950.
10. बुच एमबीए. शैक्षिक अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण (1988दृ 92). खंड 1. नई दिल्ली (भारत) एनसीईआरटीय 1997.
11. बुचर पी. द जर्नल ऑफ ट्रांसपर्सनल साइकोलॉजी. 1986, 18(1).
12. कैवनॉघ टीसी. जिद्दू कृष्णमूर्ति का सामान्य और शैक्षिक दर्शन तथा समकालीन शिक्षा के लिए इसकी प्रासंगिकता ख्पीएच. डी. थीसिस,. लॉस एंजेल्स (संयुक्त राज्य) यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्नियाय 1978.
13. चक्रवर्ती ए, संपादक. ए टैगोर रीडर. नई दिल्ली (भारत) मैकमिलन एंड कंपनी लि.य 1961. पृ. 214.
14. चौबे एसपी. भारत में शिक्षा के हाल के दर्शन डी.लिट. थीसिस,. लखनऊ (भारत) लखनऊ विश्वविद्यालयय 1962.
15. चौधरी एसके. डॉ. एस. राधाकृष्णन का शैक्षिक दर्शन और आधुनिक भारतीय शिक्षा में इसके निहितार्थ पीएच.डी. थीसिस,. भुवनेश्वर (भारत) उत्कल विश्वविद्यालयय 2000.
16. क्रेस्वेल जेडब्ल्यू. शैक्षिक अनुसंधान (चौथा संस्करण). नई दिल्ली (भारत) पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.य 2012. पृ. 80, 94.
17. देवपुरकर आरटी. भारत में शिक्षा के दर्शन का विकास पीएच.डी. थीसिस,. वडोदरा (भारत) महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, 1964.


**Creative Commons (CC) License**
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.